Roll No. ..... Total Pages : 4

MDE/M-20 **6983**

आधुनिक हिन्दी काव्य

Paper–IX/Hi-109

Time : Three Hours] [Maximum Marks : 80

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) जिन्दगी के कम कमरों में अँधेरे लगाता है चक्कर कोई एक लगातार, आवाज पैरों की देती है सुनाई बार-बार-बार-बार वह नहीं दीखता, किन्तु वह रहा घूम तिलस्मी खोह में गिरफ्तार कोई एक भीत-पार आती हुई पास से, गहन रहस्यमय अन्धकार ध्वनि-सा अस्तित्व जताता अनिवार कोई एक, और मेरे हृदय की धक् धक् पूछती है– वह कौन सुनाई जो देता, पर नहीं देता दिखाई। इतने में अकस्मात् गिरते हैं भीतर से फूले हुए पलस्तर, खिरती है चूने भरी रेत खिसकती है पपड़ियाँ इस तरह खुद-ब-खुद कोई बड़ा चेहरा बन जाता है। स्वयमपि मुख्य बन जाता है, दिवाल पर।

(ख) वह रहस्यमय व्यक्ति अब तक न पायी गयी मेरी अभिव्यक्ति है, पूर्ण अवस्था वह निज-सम्भावनाओं, निहित प्रभावों, प्रतिमाओं की, मेरे पूर्ण का आविर्भाव, हृदय में रिस रहे ज्ञान का तनाव वह, आत्मा की प्रतिमा। प्रश्न थे गम्भीर, शायद खतरनाक भी, इसलिए बाहर के गुंजान जंगलों से आती हुई हवा ने फूँक मार एकाएक मशाल ही बुझा दी– कि मुझको ये अँधेरे में पकड़कर मौत की सजा दी। किसी काले डैश की घनी काली पट्टी ही आँखों पै बँध गई, किसी खड़ी पाई की सूली पर मैं टांग दिया गया, किसी शून्य बिन्दु के अँधियारे खड्डे में गिरा दिया गया मैं अवचेतन स्थिति में।

(ग) वह बिठा देता है तुंग शिखर के खतरनाक, खुरदरे तट पर शोचनीय स्थिति में ही छोड़ देता मुझको। कहता है– पार करो, पर्वत सिन्ध के गह्वर, रस्सी के पुल पर चलकर दूर उस शिखर कगार पर स्वयं ही पहुँचो। अरे भाई मुझे नहीं चाहिए शिखरों की यात्रा। मुझे डर लगता है ऊँचाइयों से बजने दो साँकल उठने दो अंधेरे में ध्वनियों के बुलबुले वह जन वैसे ही आप चला जायेगा आया था जैसे। खड्डे के अंधेरे में मैं पड़ा रहूँगा पीड़ाएँ समेटे। क्या करूँ, क्या नहीं करूँ मुझे बताओ, इस तम शून्य में तैरती है जगत समीक्षा की हुई उसकी (सह नहीं सकता) विवेक विक्षोभ महान उसका तम अन्तराल में सह नहीं सकता।

(घ) अकस्मात् चार का गजर कहीं खड़का, मेरा दिल धड़का, उदास मटमैल, मनरूपी वाल्मीक चल-विचल हुई सहसा अगिनत काली-काली हायफन डैशों की लीकें बाहर निकल पड़ी, अन्दर घुस पड़ी भयभीत, सब ओ बिखराव, मैं अपने कमरे में यहाँ लेटा हुआ हूँ। काले-काले शहतीर छत के हृदय दबोचते। यद्यपि आँगन में नल जो मारता। जल खरखारता, किन्तु न शरीर में बल है, अंधेरे में गल रहा दिल यह।

(ङ) अनखोजी निज समृद्धि का वह परम उत्कर्ष, परम अभिव्यक्ति, मैं उसका शिष्य हूँ वह मेरा गुरू है, गुरू है। वह मेरे पास कभी बैठा ही नहीं था, वह मेरे पास आया भी कभी नहीं था, तिलस्मी खोह में देखा था एक बार, आखिरी बार ही। पर वह जगत् की गलियों में घूमता है प्रतिपल वह फटेहाल रूप। तंडित्तरंगीय वह गतिमयता, अत्यन्त उद्विग्न ज्ञान तनाव वह सकर्मक प्रेम का वह अतिशयता वही फटेहाल रूप। परम अभिव्यक्ति लगातार घूमती है जग में पता नहीं जाने कहाँ?

(च) गेरुआ मौसम, उड़ते हैं अंगार, जंगल जल रहे जिन्दगी के अब जिनके कि ज्वलन्त प्रकाशित भीषण फूलों से बहती वेदना नदियाँ जिनके कि जल में सचेत होकर सैकड़ों सदियाँ, ज्वलन्त अपने बिम्ब फैंकती। वेदना नदियाँ जिनमें कि डूबे हैं युगानुयुग से मानो कि आँसू पिताओं की चिन्ता का उद्विग्न रंग भी, विवेक पीड़ा की गहराई बेचैन डूबा है जिसमें श्रमिक का सन्ताप, वह जल पीकर मेरे युवकों में होता जाता व्यक्तित्वान्तर विभिन्न क्षेत्रों में कई तरह से करते हैं सगर, मानो कि ज्वाला पंखुरियों से घिरे हुए वे सब अग्नि के शतदल कोष में बैठे! द्रुतवेग बहती हैं शक्तियाँ निश्चयी, कहीं आग लग गई, कहीं गोली चल गई। (3×7=21)

2. (क) अज्ञेय की प्रयोगधर्मिता का विवेचन कीजिए। **अथवा** अज्ञेय के काव्य के अभिव्यंजना पक्ष का विवेचन कीजिए।

(ख) उर्वशी के काव्य में संवाद कौशल की विवेचना कीजिए। **अथवा** 'उर्वशी' को महाकाव्यत्व की संज्ञा दी जा सकती है– विवेचन कीजिए।

(ग) अज्ञेय के काव्य की वैयक्तिकता एवं सामाजिकता का सिंहावलोकन कीजिए। **अथवा** दिनकर के काव्य की सौंदर्य-चेतना का विवेचन कीजिए। (3×12=36)

3. निम्नलिखित लघूत्तरी प्रश्नों में से **पाँच** का उत्तर 250 शब्दों में दीजिए:

(क) गिरिजाकुमार माथुर का काव्य 'धूप के धान' का वर्णन।

(ख) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की भाषा-शैली।

(ग) भवानीप्रसाद मिश्र की कविता 'सतपुड़ा के जंगल'।

(घ) हरिवंशराय बच्चन का काव्य 'दो चट्टानें'।

(ङ) दुष्यन्त कुमार की कविता संग्रह 'सूर्यास्त का स्वागत'।

(च) रघुवीर सहाय का काव्य-संग्रह 'लोग भूल गए हैं'।

(छ) धर्मवीर भारती की काव्य-यात्रा का प्रारम्भ 'दूसरे सप्तक' से हुआ– विवेचन कीजिए।

(ज) नरेश मेहता का काव्य 'संशय की एक रात'।

(झ) केदारनाथ अग्रवाल का काव्य 'नींद के बादल'।

(ञ) महादेवी वर्मा की छायावादी काव्य-चेतना। (5×3=15)

4. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) अज्ञेय काव्य-संग्रह 'आँगन के पार द्वार' कब प्रकाशित हुई?

(ख) अज्ञेय का 1959 में कौन-सा काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ?

(ग) अज्ञेय द्वारा लिखित संस्मरण का नाम लिखिए।

(घ) दिनकर की एक प्रसिद्ध आलोचना कृति का नाम लिखिए।

(ङ) मुक्तिबोध किस सप्तक के कवि हैं?

(च) 'नेता नहीं नागरिक चाहिए' निबन्ध के रचनाकार कौन हैं?

(छ) 'भग्न मन्दिर बन रहा' कविता के रचनाकार कौन हैं?

(ज) 'मुक्तिबोध की जीवनी' के रचनाकार कौन हैं? (8×1=8)